प्रवासी भारतीय और लोकप्रिय संस्कृति

—डॉ. मुन्नालाल गुप्ता

सांस्कृतिक उत्पादों जैसे-संगीत, नृत्य, साहित्य, कला, फैशन, फिल्म, टी.वी., रेडियो के प्रयोग के ऐसे संग्रहित भंडार को लोकप्रिय संस्कृति कहते हैं। अंग्रेजी के शब्द 'कल्चर' और 'पॉपुलर' का अनुदित रूप हिंदी में 'लोकप्रिय संस्कृति' है। हिंदी में लोक की अवधारणालोक संस्कृति, लोक गीत, लोक गाथा आदि से जुड़ी है। इन सांस्कृतिक रूपों के पास अपने मिथ, रूचि, विश्वास, प्रथा, परंपराएं आदि होती हैं। इनकी सर्व प्रमुख विशेषता एक निश्चित स्थान विशेष व समूह विशेष की किन्हीं निश्चित विशेषताओं को अपने गीतों व कथाओं में व्यक्त करना होता है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार, लोकप्रिय का आधार आम आदमी है। प्रत्येक देश की परिस्थितियाँ बहुत से स्तर पर भिन्न हुआ करती हैं। बावजूद इसके एक समान विशिष्टाओं वाले वर्ग में सतह पर कुछ एक जैसा घर रहा होता है। लोकप्रिय संस्कृति के सर्जकों ने शास्त्रीय कला रूपों का सामयिक सन्दर्भों में पुनर्निर्माण किया है। सांस्कृतिक प्रक्रिया में यह भी देखा गया है कि कभी-कभी लोकप्रिय संस्कृति का कोई रूप शास्त्रीय कलारूप लोकप्रिय संस्कृति में बदल जाए या लोकवादी संस्कृति में बदल जाए। लोकप्रिय संस्कृति राज्य और शास्त्रीय के आधिपत्य/हेजिमनी के विरुद्ध आमजन के उद्‌गार को व्यक्त करने का माध्यम होती है। (ग्राम्शी अंटोनियो, 1971) भारत में लोकप्रिय संस्कृति के दायरे में पैदा हुए सांस्कृतिक आंदोलनों के रूप में भक्ति आन्दोलन प्रगतिशील साहित्यांदोलन और रविन्द्र संगीत को रख सकते हैं।

लोकप्रिय संस्कृति का प्रमुख आधार है जनमाध्यम। यह जनसंचार के बगैर विकसित नहीं हो सकती। लोकप्रिय संस्कृति हमेशा जनसंचार के उपविभाग के रूप में अभिव्यक्त होती रही है। सीमित संचार साधनों के काल में मानव समाज छोटी-छोटी

सम्पर्क: प्रवासन एवं डायस्पोरा अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र - 442001
मो. 9028226561, ई-मेल: mlgbharat@gmail.com

स्वतंत्र इकाइयों में खंडित रहा। इसके विपरीत, जन संचार के माध्यमों के अभूतपूर्व विकास ने समसामयिक विश्व को संकुचित कर एक बड़ा-सा गाँव बना दिया है। 20वीं सदी के प्रारंभिक दशकों से मीडिया के प्रभाव में निरंतर प्रवाहमान लोकप्रिय संस्कृति ने आम लोगों के दिन-प्रतिदिन के जीवन से गहरे रूप में जुड़कर किसी खास विषय पर आम लोगों की राय और नजरिए में बदलाव लाना प्रारंभ किया। लोकप्रिय संस्कृति के प्रमुख दृश्यगत पहलू हैं - मनोरंजन (चलचित्र, वृत्तचित्र, संगीत, टेलीविजन, खेल), समाचार (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, सेटेलाईट), राजनीति, पहनावा, फैशन, टेक्नोलॉजी और खानपान आदि। प्रवासी भारतीयों के जीवन में लोकप्रिय संस्कृति (पोपुलर संस्कृति) की महत्वपूर्ण भूमिका है।

प्रवासी भारतीय उन भारतीय समुदायों से मिलकर बना है, जो इतिहास के विभिन्न काल खंडों में क्रमिक रूप में अलग-अलग व्यवस्थाओं के अंतर्गत भारत से विश्व के अनेक स्थानों के लिए प्रवासित हुए और वहीं बस गए। इन्हें आज भारतीय डायस्पोरा/ अप्रवासी भारतीय/ नया डायस्पोरा/ पुराना डायस्पोरा/ अनिवासी भारतीय जैसे नामों से भी जाना जाता है। प्राचीन काल में व्यापारिक और धार्मिक समूहों, औपनिवेशिक काल में सिद्धदोष, अनुबंधित श्रमिकों 'कुली', गिरमिटिया, कंगनी, मैस्त्री से लेकर स्वतंत्र भारत के 'प्रतिभा-पलायन' से जुड़े भारतीय समुदाय अपने मातृ देश/स्वभूमि (होमलैंड) भारत से प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से संबंध बनाये हुए हैं। इन संबंधों को बनाये रखने में लोकप्रिय संस्कृति के विविध रूपों जैसे फिल्म, टेलीविजन, संगीत, खानपान, पहनावा, विचार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

अर्जुन अप्पादोरई (1990) ने वैश्विक स्तर पर प्रवासित होकर दूसरे देशों में रहने वाले लोगों (भारतीय) के बीच जुड़ाव और सांस्कृतिक तत्वों के आवागमन को बताने के लिए पांच आयामों (एथानोस्केप, मीडियास्केप, टेक्नोस्केप, फिनोस्केप और आइडियास्केप) की चर्चा की है। मीडियास्केप, मीडिया के विविध रूपों के उत्पादन और उसके वितरण से संबंधित है। मीडिया के विविध स्वरुप में शामिल मुख्य तत्व हैं - समाचार पत्र, टेलीविजन, रेडियो, फिल्म आदि। मीडिया के इन स्वरूपों में वैश्विक स्तर पर रहने वाले भारतीय समुदाय के 'वृत्तांत/ नैरेटिव' होते हैं और यह वृत्तांत संसार के कोने-कोने में रहने वाले भारतीय डायस्पोरा समुदाय को एक दूसरे से जोड़कर बृहत भारतीय परिवार/समुदाय के लिए 'कल्पित संसार/ इमेजिंडवर्ल्ड' की रचना करते हैं। मीडिया के माध्यम से प्रसारित होने वाली भारतीय लोकप्रिय संस्कृतियों के विविध रूपों से दूर देशों में रहने वाले भारतीय डायस्पोरा एक दूसरे से गहरे रूप से जुड़ जाते हैं और वे अपने को बृहत भारतीय परिवार का अंग मानने लगते हैं, जिसे बेनेडिक्ट एंडरसन ने (1983) 'कल्पित समुदाय/इमेजिंडकम्युनिटी' कहा है। बेनेडिक्टएंडरसन (1992) की 'लम्बी दूरी राष्ट्रीयता/लॉन्गडिस्टेंसनेशनलिटी' के विचार का आधार समुद्रपारीय देशों में जा बसे भारतीयों द्व ारा अपने को मातृदेश/होमलैंड भारत के बृहत परिवार और राष्ट्रीयता से जुड़ाव की भावना में निहित है।

लोकप्रिय संस्कृति के रूप में वैश्विक भारतीय डायस्पोरा से जुड़ाव रखने वाली बालीवुड फिल्म 'पूरब और पश्चिम' (1970), 'दिल वाले दुलहनियां ले जायेंगें' (1995), 'परदेश' (1997), 'आ अब लौट चलें' (1998), 'भाजी ऑनविच'(1993), 'अमेरिकन चाय', 'फायर', 'द रिलक्टें ट फंडामेंटलिस्टस' 'माईग्रेशन', (2007), 'नेमसेक' (2006), 'मॉनसूनवेडिंग' और 'सलाम बोम्बे', फिजी के भारतवंशी विमल रेड्डी की फिल्में 'अधूरा सपना' (2007), 'घर परदेश' (2009), 'हाई वे टूसुवा' (2013), दीपामेहता की फिल्म 'विदेश' आदि ने विदेशों में बस गए भारतीयों को भावनात्मक स्तर पर जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। कैरेबियन क्षेत्र के देशों यथा- गयाना, ट्रिनिदाद और सूरीनाम की देशज, भारतीय लोकसंगीत और वेस्टर्न लय के फ्यूजन से निर्मित चटनी संगीत वैश्विक स्तर पर रहने वाले भारतीय लोगों को जोड़ने का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

आधुनिक संचार माध्यमों यथा- इंटरनेट, मोबाइल, सेटेलाइट टेलीविजन इत्यादि ने भारतीय डायस्पोरा और भारत में रहने वाले उनके परिवारों के बीच संपर्क को बढ़ा कर उन्हें वैश्विक भारतीय परिवार/समुदाय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इसके माध्यम से वैश्विक स्तर पर निवास करनेवाले भारतीयों के बीच सामुदायिकता बढ़ी है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण भारत में घटने वाली किसी भी प्रकार की सामाजिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक घटनाओं पर हो रही उनकी प्रतिक्रिया, समर्थन से पता चलता है। संचार माध्यमों ने सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रमों के द्वारा भारतीय संस्कृति और भाषा का संरक्षण किया गया। मॉरीशस के भारतीय मूल के लोगों ने 1868 में तमिल 'द मार्केट एडवर्टाइजर' समाचारपत्र की शुरुआत की। मणिलाल डाक्टर द्वारा 1909 में अंग्रेजी, गुजराती और हिंदी में 'हिंदुस्तानी' दैनिक पत्र को निकाला और उसके माध्यम से भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की समस्या से संबंधित समाचारों को सरकार तक पहुंचाया। साथ ही अपने लेखों द्वारा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों और भारतीय लोगों के आत्मसम्मान को बढ़ाया। मणिलाल डाक्टर ने (1912 से 1920 तक) फिजी में बसे भारतीय गिरमिटिया मजदूरों और अन्य भारतीयों को संगठित करने के लिए द्विभाषीय अखबार 'इंडियन सेटेलर' निकाला। महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में स्थापित फीनिक्स फार्म से 'इंडियन ओपीनियन' नामक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया जो पूर्णत: सहकारिता एवं श्रमदान के नियम पर संचालित होता था। इस पत्र का मुख्य उद्देश्य था पूरे विश्व में जहाँ कहीं भी भारतीय रहते हों उन तक सत्याग्रह से संबंधित घटनाओं को पहुँचाना, दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतीय को सत्याग्रह की तालीम देना। (गांधी, 1968:162) इस तरह संचार माध्यमों ने भारतीय डायस्पोरा को संगठित कर औपनिवेशिक काल में संघर्ष के लिए तैयार किया और आज संचार के ये माध्यम वैश्विक भारतीय समुदाय को एक सूत्र में जोड़कर सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने में मदद कर रहे हैं।(लाल, ब्रिज.वी., 2007:104)

समुद्रपारीय देशों में बसे भारतीय डायस्पोरा समुदाय की अपेक्षाओं, रुचियों, जरूरतों को लक्ष्य मानकर कई नृजातीय और मुख्यधारा के मीडिया को विकसित और निर्मित किया जा रहा है। 'देस-परदेस' और 'पंजाब टाइम्स' ब्रिटेन के साउथ-हॉल में बड़ी संख्या में बसे भारतीय मूल के पंजाबी समुदाय रुचियों को ध्यान में रखकर खबरें देते हैं। इसी प्रकार से फिजी में बसे भारतीयों को ध्यान में रखकर 'द संडे टाइम', 'शांतिदूत', 'इंडियन सेटलर्स', 'द फिजी समाचार', तारा जैसे संचार माध्यमों को प्रकाशित किया जा रहा है। शांतिदूत समाचार पत्र तो हिंदी भाषा में प्रकाशित होकर फिजी में बसे भारतीय समुदाय खासकर नयी पीढ़ी के लिए भारतीयता के विचार और संस्कृति के विविध आयामों में जानकारी देकर उन्हें प्रशिक्षित करने का भी कार्य कर रहा है। इस संचार पत्र में खेल, धर्म, फिल्म के साथ-साथ फिजी में भारतीय मूल द्वारा बोली जानेवाली भाषा 'फिजी बात' का भी एक कॉलम छापा जाता है। इसके अतिरिक्त विदेशों में कई रेडियो चौनल भी हैं जो भारतीय समुदाय को अपना लक्ष्य मानकर खबरें और मनोरंजन से संबंधित सामग्री परोसते हैं। इनमें से एक है 'सनराइज चौनल' जिसके द्वारा भारत और एशियाई मूल के लोगों से संबंधित खबरों के साथ-साथ हिंदी फिल्मी गाने और भारतीय लोकगान को प्रसारित किया जाता है।

सामान देशज पृष्टभूमि के प्रवासी भारतीयों के पूर्वजों द्वारा लोकप्रिय सांस्कृतिक गठरी के तहत ले जाये गए परंपराएँ, धर्म, रीति-रिवाज, लोकसंगीत, लोककथाएँ, नृत्य, गायन, भाषा, खानपान, स्मृतियाँ, यादें आदि ने वैश्विक स्तर पर भारतवंशियों को जोड़ने का कार्य किया है। भारतीय शास्त्रीय/क्लासिकल नृत्य जैसे ओड़िसी, भरतनाटयम, कुचिपुड़ी आदि ने वैश्विक भारतीय डायस्पोरा को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। भरतनाटयम, कत्थक जैसे शास्त्रीय नृत्य वैश्विक भारतीय डायस्पोरा समुदाय को भारत के धर्म-संस्कृति के साथ ही नहीं बल्कि स्वभूमि भारत की अध्यात्मिक विरासत से गहरे रूप से

जोड़ती है। ये शास्त्रीय नृत्य भारतीय डायस्पोरा के खासकर नयी पीढ़ी के लिए अपने मातृ देश से जुड़े रहने के लिए अनिवार्य भावनात्मक फैशन-सा हो गया है। अकरम खान, शोभना जयसिंह, दक्षा सेठ जैसे भारतीय डायस्पोरा के कलाकारों ने संरचनात्मक और विचार के स्तर पर इन परंपरागत/शास्त्रीय नृत्यों के साथ पश्चिमी और समकालीन तत्वों को फ्यूजन के द्वारा गैरभारतीयों को भी आकर्षित किया है। (लाल, ब्रिजवी, 2007:108) मेनका ठक्कर, रीनासिंघा, सुधा खान्द्वानी, लाता पाडा, जोअन्ना दास, जनक खेंद्री और आलोका मेहंदीरत्ता कनाडा की भारतीय मूल की प्रमुख नृत्यांगना हैं।

टेलीविजन और फिल्म के माध्यम से आज भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का विस्तार विदेशों में भी हो रहा है। ऐसे कई चौनल हैं, जिनका प्रसारण कई देशों में होता है और उन्हें देखने वाले भारतीयों की संख्या भी विदेशों में अधिक है। सैटेलाइट टेलीविजन के युग में आज वैश्विक स्तर पर प्रसारण संभव हो पाया है। इन सभी संचार माध्यमों का व्यापक असर आज भारतीय डायस्पोरा पर देखने को मिलता है। चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र हो, आर्थिक जगत हो, सांस्कृतिक या सामुदायिक पहचान का मुद्दा हो, इन सभी क्षेत्रों में आधुनिक संचार माध्यमों का असर साफ दिखाई देता है। इस तरह के सेटेलाइट टेलीविजन में प्रमुख है: जी टी. वी. (यू.के-यूरोप), दक्षिण एशिया के दर्शकों भारतीय भाषाई, क्षेत्रीय पहचान और नृजातीय पहचान से जुड़े जी अल्फा चौनल जैसे- अल्फा बंगला, अल्फा गुजराती, अल्फा मराठी, अल्फा पंजाबी आदि। ब्रिटेन में अल्पसंख्यक समुदाय के नृजातीय पहचान से जुड़े बी.बी.सी. का ब्लैकब्रिटेन नेटवर्क, बी.बी.सी. के कुछ कॉमेडी संबंधित प्रोग्राम हैं-गुडनेसग्रैसिअसमी, मीरा स्याल की उपन्यास लाइफ इस नॉटहाहा ही हीपर आधारित तीन भागों का धारावाहिक, 2005 से सोनी टी.वी. का सोनी टी.वी. एशिया चौनल आदि। विभिन्न देशों के टेलीविजन पर चलने वाले धारावावाहिकों जैसे 'रामायण', 'महाभारत', 'सास भी कभी बहू थी' आदि समुद्रपारीय देशों में बसने वाले भारतीयों को स्वभूमि की सामाजिक धार्मिक जड़ों से भावनात्मक रूप से जोड़कर उन्हें एक वैश्विक भारतीय परिवार का अंग होने का एहसास कराता है।

वैश्वीकरण के युग में सूचना प्रौद्योगिकी और संचार माध्यमों की क्रांति ने आर्थिक गतिविधियों के साथ-साथ संस्कृति के भौतिक-अभौतिक तत्वों का भी बहाव वैश्विक स्तर पर बढ़ाया है, जिसने वैश्विक स्तर पर सामूहिक चेतना को जन्म दिया है। इस प्रभाव ने वैश्विक भारतीय डायस्पोरा की स्मृतियों को व्यापक रूप से प्रभावित कर अपनी मातृभूमि और उसके सांस्कृतिक मूल्यों एवं मूल से जुड़ने की ललक को बढ़ाया है। इंटरनेट, माइक्रोब्लागिंग वेबसाइटों, ट्विटर, फेसबुक, स्काईप, विडिओ कालिंग, सोशल मीडिया जैसे माध्यमों ने भारतीय डायस्पोरा को अपने स्वभूमि से जोड़नेवाला आसान माध्यम प्रदान किया है। इस संपर्क ने उनके अंदर भावनात्मक शक्ति प्रदान की और उनकी भागीदारी को भारत के राजनीतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रों के साथ जोड़ा है जिसका प्रत्यक्ष अनुभव अन्ना हजारे द्वारा किया गया भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन तथा भारतीय लोकतंत्र के लिए होने वाले आम चुनाव के समय अपनी पसंद के राजनीतिक दलों को दिए जाने वाले आर्थिक और मनोवैज्ञानिक समर्थन में भी देखा जा सकता है। इन संचार के विविध माध्यमों ने विदेशों में बसे भारतीय समुदाय को संस्कृति के विविध मार्कर्रों/चिन्हों जैसे-धर्म, भाषा, मनोरंजन, फिल्म, साहित्य, पहनावा, राजनीति, शिक्षा, समाज, खानपान, खेल के माध्यम से भारतीयता के सूत्र में बंधकर 'वैश्विक भारतीय समुदाय' को निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। (तेज.के.भाटिया, 2001)

हिंदी फिल्मों और बालीवुड के गानों का भी एक बड़ा बाजार विदेशों देशों में है। ये एथिक मीडिया द्वारा विदेशों में प्रसारित की गयी भारतीय समाज, संस्कृति से जुड़ी सामग्री, समाचार और ये हिंदी फिल्म, गाने, भजन, योग वैश्वीकरण और उदारीकरण के दौर में पश्चिम से पुरब की ओर गतिमान उनकी सांस्कृतिक

और वैचारिक तत्वों का एक प्रकार से काउंटर है। साथ ही ये मीडिया और फिल्में भारतीय समाज और पारिवार के मूल्यों के विचार (आदर्श बेटा, आदर्श भाई, आदर्श पिता, आदर्श बहु, आदर्श पत्नी आदि) को विदेशों में बसने वाले भारतीय समुदाय के बीच प्रसारित करने का एक सशक्त माध्यम है जिसे अर्जुन अप्पादुरई ने आईडियास्केप (1990) में कहा। हिन्दी फिल्मों और एथनिक मीडिया की धारावाहिकों की कहानियाँ अक्सर भारत की सांकृतिक परंपरा के साथ जुड़ी होती हैं, (गिल्लेस्पी, 1995)। ये भारतीय फिल्म वैश्विक स्तर पर निवास करने वाले भारतीयों के बीच सामुदायिकता और भाईचारे की भावना संचारित कर वैश्विक स्तर पर निवास करनेवाले लोगों को वैश्विक भारतीय परिवार बना देता है।

वैश्विक भारतीय समुदाय के लिए खानपान के तरीके और उपयोग की जाने खाद्य वस्तुएं इन्हें सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक रूप से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये खानपान ही थे जिनके स्वाद की स्मृति ने विदेश में बसने वाले भारतीयों को भारतीयता की भावना से जोड़कर उन्हें एक वैश्विक भारतीय समुदाय बनाया। अपने स्वभूमि से सुदूर समुद्रपारीय देशों में अपनी मर्जी या जबरन ले जाये गए सिद्ध दोषी, गिरमिटिया और कंगनी मैस्त्री अपने साथ अपने देश की स्मृति और लोकप्रिय सांस्कृतिक गठरी ले गए जिनमें भारतीय भोजन भी शामिल था। इनमें दालपूड़ी, आलूपूड़ी, सत्तुपुड़ी, घी की पूड़ी, कोहड़े की सब्जी, बैगन और आलू का भरता, इटली, डोसा, ठेकुआ, हलुआ इत्यादि। ये भोजन फिजी, मॉरिशस, सूरीनाम, गयाना, त्रिनिदाद जैसे देशों में एक-दूसरे के बीच भातृत्व, समानता विश्वास और आपसी प्रेम को बढ़ाता है। यहाँ के बाजारों में भारतीय अचार, चटनी, मुरब्बे, नमकीन गुझिया, जलेबी, लड्डू, खुरमा के साथ भारतीय लोगों द्वारा तैयार मसाले (लंदन में पाठक मसाला) हिंदुस्तानी समुदाय की खानपान की विशिष्टता के साथ-साथ भारतीयों के बीच सामुदायिक एकता को दर्शाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। सिंगापूर के 'लिटल इंडिया' नृजातीय अंत:क्षेत्र/ एथनिक इन्क्लेव में भारत के समान ही केले के हरे पत्ते पर भोजन किया जाता है। लंदन में भारतीय भोजन के लिए पहला भारतीय रेस्टुरेंटरिजेंट स्ट्रीट में वीरास्वामी के द्वारा 1926 में खोला गया। जी.के. नून रॉयल स्वीट शॉप के मालिक हैं जो भारतीय भोज्य पदार्थ निर्मित करने वाले प्रसिद्ध उद्यमी रूप में जाने जाते हैं। मधुर जाफरी, लंदन के रॉयल एकेडेमी फॉर आर्ट्स में प्रक्षिक्षण के बाद भारतीय खानपान की तरफ मुड़े और उन्होंने भारतीय खानपान में प्रशिक्षण देने के साथ-साथ कई पुस्तकें लिखी जिनमें प्रमुख हैं-ऐनइनिशिएटिवटू इंडियन कूकिंग(1973), अल्टीमेटकरी बाइबल, वर्ल्ड विजिटेरियरक्राउन, लंदन में ही श्रावणी बासु का करी इन क्राउन नाम से प्रसिद्ध रेस्टुरेंट है। अर्जुन अप्पादुरई (1990) के अनुसार, खानपान की ये क्षेत्रीय और नृजातीय स्वरुप विदेशी धरती पर भारवंशियों को भारतीयता की भावना और मातृदेश (होमलैंड) की राष्ट्रीयता से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

खानपान की तरह भारत के क्षेत्रीय विविधताओं को रूपायित करते भारतीय पहनावे और कपड़े तथा उसके पहनने के तरीकों की बानगी समुद्रपारीय पुराने और नये भारतीय डायस्पोरा में देखने को मिलते हैं। इन कपड़ों में प्रमुख हैं-साड़ी, ब्लाउज, शेरवानी, जोधपुरी, सलवार, कमीज, चुड़ीदारकुर्ता, घाघरा, चोली, लंहगा। इनके साथ ही चुड़ी, बिंदिया, कॉस्मेटिक का प्रयोग भी भारतीय डायस्पोरा द्वारा किया जाता है जो उन्हें बृहत वैश्विक भारतीय डायस्पोरा समुदाय के साथ जोड़ता है।

इस प्रकार लोकप्रिय संस्कृति के ये विविध रूप विदेशों में बसी भारतीय समुदाय की पुरानी पीढ़ी के लिए जहाँ एक ओर भावनात्मक संबल रहा है तो दूसरी ओर नई पीढ़ी को भारतीय परंपरा और संस्कृति के साथ जोड़कर विदेश में सामूहिक भारतीय पहचान को निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है जिसे 'नैरेटिव आइडेंटिटी थ्योरी' के परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है।

✧✧✧